ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

कृषि मौसम विज्ञान विभाग
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन **गुमला** जिले के लिए

AMFU, Ranchi
Ref.: 8/1 (61) AAS/Ranchi
Mob.: 9340446914

IMD, New Delhi
Date: 04.08.2026
Email: amfuranchi@gmail.com

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त अगले पाँच दिनों (04 अगस्त से 08 अगस्त) का मौसम पूर्वानुमान

	04 अगस्त	05 अगस्त	06 अगस्त	07 अगस्त	08 अगस्त
वर्षा (मिलीमीटर)	16	18	18	25	25
अधिकतम तापमान (डिग्री से.)	30	29	28	28	28
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.)	23	22	22	23	24
आकाश में बादल की स्थिति	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	71-92	72-92	72-95	72-95	76-95
हवा की गति (कि. मी. प्रति घंटा)	8	8	6	8	8
हवा की दिशा	दक्षिण-पूर्व की ओर से	दक्षिण की ओर से	दक्षिण की ओर से	दक्षिण की ओर से	दक्षिण की ओर से

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह

पिछले पांच दिनों में, कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला, कांके, रांची में 73.2 मि.मी. बारिश दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 27.5-32.3 °C और न्यूनतम तापमान 19.4-23.3 °C के बीच रहा। सापेक्ष आर्द्रता 68-89% के बीच रही। आने वाले पांच दिनों में मौसम नम एवं अपेक्षाकृत ठंडा बना रहेगा, लगातार वर्षा के कारण तापमान में हलकी गिरावट की संभावना है। गरज-चमक और तेज हवाओं के साथ वर्षा की संभावना बनी रहेगी।	
आने वाले दिनों में बादल छाए रहने और बारिश होने की संभावना को देखते हुए, किसान भाई खेत में डोभा के निर्माण के माध्यम से यथास्थान संरक्षण और जल संचयन के माध्यम से वर्षा जल का प्रबंधन (निचले सिरे पर भूमि क्षेत्र के 1/10 वें भाग पर) करें। जो सूखे दिनों मे फसलों की जल आपूर्ति को पूरा करने मे मदद कर सकते हैं । जिस किसान के पास ऊपरी खेत अभी भी परती रह गया है, वे कुलथी, उरद, मूंग या विभिन्न सब्जियों की खेती के लिए तैयारी करें। किसानों को आगामी 5 दिनों में सिंचाई, खड़ी फसलों में पौध संरक्षण उपायों और उर्वरकों के प्रयोग को स्थगित कर देना चाहिए। कटी गई उपज को सुरक्षित स्थानों पर रखें। भारी बारिश से बचाने के लिए सब्जियों के पौधों को पॉलिथीन से ढक दें। बारिश और बादल की स्थिति से खड़ी फसलों में रोग का प्रकोप बढ़ सकता है, इसलिए किसानों को इसकी निरंतर निगरानी रखनी चाहिए। बरसात के दिनों मे किसि भी दावा का छिड़काव साफ मौसम देख कर ही करें तथा दावा के घोल मे संडोवित या टीपोल (1 मिलिलीटर प्रति 2 लिटर पानी) अवश्य मिलाएँ। इनके आभाव मे दावा के घोल को साबुन के पानी मे तैयार करें। इससे दावा को घोल चिपचिपा हो जाता है तथा हल्की वर्षा के बावजूद दावा पूर्णतया पौधे से धुलता नहीं है।	
धान	जो किसान भाई अभी तक धान की बुवाई या रोपाई नहीं कर पाएं है वे मध्यम ज़मीन पर ऐरोबिक धान के लिए जाएँ, एरोबिक धान खेती प्रणाली खेती की वह विधि है, जहां धान की फसल को बिना पोखर वाले खेत वाले खेत में सीधी बुआई (सूखा या पानी में भिगोया हुआ बीज) द्वारा स्थापित किया जाता है। इसके लिए उन्नत किस्में है – CR धान 202 एवं सीआर धान 204, जो 100 से 115 दिन की फसल है। इन धान की क़िस्मों मे पानी को केवल मिट्टी संतृप्ति स्तर पर बनाए रखने की आवश्यकता होती है ना की जल जमाव की। हालांकि इनमे खरपतवार के प्रकोप देखे जा सकते है इसलिए सफल खेती के लिए प्रभावी एवं समय पर खरपतवार नियंत्रण अनिवार्य है। सीधी बुवाई वाले धान की फसल तीन से चार हफ़्ते की अवस्था में है। चूँकि आने वाले दिनों में हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान है, इसलिए किसान भाई निराई गुड़ाई / खरपतवार नियंत्रण के लिए जाएँ। 35 किलो यूरिया प्रति एकड़ डालें, उसके बाद निराई-गुड़ाई करें और खाली जगहों को भरें। खाद डालते समय अतिरिक्त पानी निकाल दें और एक दिन बाद पानी को खेतों में डाल दें।
मक्का	जल्दी बोई गई मकके की फसल 4 सप्ताह की अवस्था मे है। अत: फसल मे निकाई-गुड़ाई करे तथा 26 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ के दर से डालें और मिट्टी चढ़ा दें। लंबे समय तक बादल छाए रहने तथा वर्षा के कारण मकके मे जीवाणु डंठल सड़न रोग के संक्रमण की संभावना रहती है विशेषकर अंकुरण से वानस्पतिक अवस्था तक। डंठल की सड़न को नियंत्रित करने के लिए सूखे दिनों में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड आधारित रसायनों का प्रयोग करें। इसके अलावा 30 किग्रा एम°ओ°पी प्रति एकड़ को 2 बार मे डालने जिससे इस रोग की गंभीरता कम हो जाती है।
अरहर	समय पर बोई गई फसल वानस्पतिक अवस्था में है, ढलान की तरफ़ नालियाँ बनाकर अतिरिक्त पानी निकालने का इंतज़ाम करें। जो किसान अभी भी बुआई का इंतजार कर रहे हैं उन्हें ज्वार/ चावल / मक्का / मूंगफली / सोयाबीन / उर्दबीन / मूंग और भिंडी के साथ अंतरफसल अपनाने का सुझाव है। अंतरफसल के मामले में अरहर + ज्वार पंक्ति अनुपात 1:1, अरहर + मक्का पंक्ति अनुपात 1:1, अरहर + मूंगफली पंक्ति अनुपात 1:3, अरहर + सोयाबीन पंक्ति अनुपात 1:2, अरहर + उर्द/मूंग पंक्ति अनुपात 1:2 और अरहर + भिंडी पंक्ति अनुपात 1:1 बनाए रखा जाना चाहिए और तदनुसार उर्वरक दें।
कंद फसलें	ऊपरी जमीन पर किसान भाई कंद फसलें जैसे ओल तथा मसाले जैसे हल्दी की बुवाई करें। बुवाई नाली एवं मेड़ विधि से करें। जो किसान भाई ये फसलें लगा चुके है वे आने वाले दिनों मे वर्षा की संभावना को देखते हुए जल निकासी की उचित सुविधा करे, जल निकासी के पश्चात खरपतवार का नियंत्रण कर मिट्टी चढ़ा दें।
सब्जी एवं फूल	जरबेरा की फसल में फफूंद रोग के प्रकोप देखे जा रहे है, इससे बचाव हेतु किसान भाई बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर हर पौधों के जड़ों के पास डालें।

	यह समय मिर्च, बैंगन व फूलगोभी (सितम्बर में तैयार होने वाली) की पौधशाला बनाने के लिए उपयुक्त है। किसान पौधशाला में कीट अवरोधी नाईलोन की जाली का प्रयोग करें, ताकि रोग फैलाने वाले कीटों से फसल को बचा सकें। पौधशाला को तेज धूप से बचाने के लिए छायादार नेट द्वारा 6.5 फीट की ऊँचाई पर ढक सकते है। बीजों को केप्टान (2.0 ग्राम/ कि.ग्रा बीज) के उपचार के बाद पौधशाला में बुवाई करें। परवल में फल और बेल सड़न, पत्ती झुलसन देखी जा सकती है। खेत से क्षतिग्रस्त फल और बेलों को हटा दें और उन्हें खेत में या उसके आसपास न रखें। धूप वाले दिन में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 3 ग्राम/लीटर पानी और मेटालैक्सिल 8% + मैन्कोज़ेब 64% @ 2.5 ग्राम/लीटर पानी का बारी-बारी से छिड़काव करें। करेले की फसल में फल मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे है, जिससे करेले के फल पिले दिखने लगते है तथा फल जल्दी नरम हो जाते हैं। इसके बचाव हेतु किसान भाई अपने खेतों में 20 - 25 फेरोमोने ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं।
पशुपालन	जुगाली करने वाले पशुओं को नयी घास चरने से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल नेमाटोड बीमारी की संभावना रहती है जिसमे एनीमिया और दस्त जैसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। इसके लिए फेनबेन्डाज़ोल 5 से 10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम वज़न के हिसाब से पशुओं को दें।
मडुआ	मडुआ की फसल जो 20 से 25 दिन पुरानी है उनमे निकाई - गुड़ाई करें, इसके पश्चात 22 किलोग्राम प्रति एकदम यूरिया का भुरकाव करे।

अनुराग सनाडया
रिसर्च एसोसिएट

डॉ. रमेश कुमार
नोडल आफिसर